रात्रिक्लास 26-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

वहां है फालोअर्स का अपने गुरु में प्यार। और कोई सम्बन्ध तो है नहीं। न बाप-दादा का न भाईयों का है। यहां फिर है भाई-बहनों का। प्रवृति मार्ग है ना। यह है परिवार। कौन सा परिवार है। यह तो वह जानते ही नहीं। सारी दुनिया में है आसुरी परिवार। क्योंकि रावण का राज्य है। सन्यासियों आदि पास है गुरु और शिष्य की बात। और सम्बन्ध नहीं। फालोअर्स का सम्बन्ध है। उसमें वरसे की बात नहीं। वह लव नहीं रहता है परिवार का। सतयुग में बड़ा लव रहता है। फिर आसुरी सम्प्रदाय बनते हैं तो प्रेम है नहीं। यह दुनिया है ही प्रवृति मार्ग का। परिवार होता है, सन्यासियों में परिवार की बात ही नहीं। वरसे की खुशबूयें परिवार में होते हैं। तो सन्यासियों में प्यार की खुशबूयें नहीं। सिर्फ गुरु ही कहेंगे। यहां तो तुम परिवार में बैठे हो। गुरु शिष्य की भावना नहीं। और सतसंगों में भावना है गुरु शिष्य की। अनेक गुरु अनेक शिष्य। यहां एक बाप और एक बच्चे। तुम सभी भाई2 हो। एक बाप के बच्चे हो। कहते भी हैं हम भाई2 हैं। एक बाप है। परन्तु समझते नहीं। तो यह सभी है परिवार अथवा फैमली प्यार। यह है ईश्वरीय फैमली। ईश्वर का नाम क्या है। ईश्वर कोई नाम नहीं है। ईश्वर तो महिमा है। नाम ईश्वर का गाया जाता है शिव। वह निराकार है। निराकार को फादर भी कहते हैं तो आत्मायें हो जाती हैं बच्चे। वहां सन्यासियों में यह सम्बन्ध नहीं। तुम अभी प्रवृति मार्ग में हो। बाप से वरसा लेते हो। भक्तिमार्ग में वरसे की बात नहीं। हद का वरसा और बेहद के वरसे को तुम बच्चे जानते हो। वह तो बेहद के बाप को सर्वव्यापी कह देते तो वरसे की बात नहीं। तुम जानते हो हम हद के बाप के बच्चे भी है बेहद के बाप के भी हैं। बाप कहते हैं मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूं। मामेकं याद करो। तुम पुकारते आये हो क्योंकि पतित हो गये हो। बुलाते हो आकर पावन बनाओ। तो यह है प्रवृत्ति मार्ग का लव। सतयुग में होता है पवित्रता का लव। यहां है अपवित्र लव। तो दुःख होता है। रात दिन का फर्क है ना। तुम जानते हो पवित्र बनते हैं तो पीस प्रास्पर्टी भी प्राप्त होती है। यह खेल बना हुआ है। लाखों वर्ष की बात ही नहीं। अभी सन्यासियों पास हैं गुरु और शिष्य। वहां यज्ञ रच रहे हैं। कितना खर्चा करते हैं। यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। सच्चा2 तो यह है। वहां है भक्ति। ज्ञानसागर है ही रुद्रशिव। इस यज्ञ में सारी दुनिया की आहुति पड़ेगी। उस यज्ञ से जिल्ट कुछ नहीं निकलता। रिजल्ट इस ज्ञान यज्ञ से निकलता है। तुम जानते हो हम नई दुनिया में जाते हैं। फिर कोई यज्ञ होता ही नहीं। यह मंदिर आदि भी कितने बोध को पाते हैं। जैसे यहां हनुमान का मंदिर बनाया। अभी तुम सब जानते हो तुम्हारे पास अन्धश्रधा है नहीं। तुम बाप को जानते हो। बाप इसमें प्रवेश कर तुमको समझाते हैं तो यह भी सुनते हैं। इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। बाकी कोई बैल आदि की बात नहीं। शिव तो चढ़ न सके। अभी तुम्हारा नाम ही रखा है स्वदर्शनचक्रधारी। शास्त्रों में कितनी ढेर बातें लिख दी हैं। वह सभी है भक्ति, यह है ज्ञान। ज्ञान माना पढ़ाई जिससे पद मिलता है। स्वदर्शनचक्रधारी बनने से चक्रवर्ती राजा बनते हैं। कोई नहीं समझा सकते तो रोज प्रेक्टीस करो। स्कूल में नम्बरवार तो होते हैं ना। 84 का चक्र कैसे फिरता है यह भी बुद्धि में बैठ जाना चाहिए। जिसने शुरु से भक्ति की है वह जल्दी समझेंगे। जो देरी से आते हैं वह इतना नहीं समझेंगे। चित्र देख जाते हैं समझते कुछ भी नहीं। बच्चे जो समझते हैं वह समझा भी सकते हैं। बहुत है जो पुरानों में आगे गेलप करते हैं। दिन प्रति दिन इतनी अच्छी पायन्टस मिलती है जो झट जाये। ऐसे न समझे हमदेरी से आये हैं। कैसे पहुंच सकेंगे। बाप कहते हैं तुम सात रोज में जो उठाते हो वह 20 वर्ष वालों ने भी नहीं उठाया है। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है। पीछे भी आने वाले अच्छा पुरुषार्थ कर ऊंच पद पा लेंगे। कमाई भी बड़ी जबरदस्त है 21 जन्म की। बेहद के बाप से बेहद का वरसा मिलता है। यहां तो विकार बिगर रह नहीं सकते। निश्चय बैठ जाता है तो फिर निश्चय में विजय हो जाती है। कोई तो झट शराब, सिगरेट आदि छोड़ देते हैं। तुम बच्चों को बाप पवित्र बनाकर रावण पर जीत पहनाते हैं। यहां सारी दुनिया पर है रावणराज्य। वहां है रामराज्य। शास्त्रों में कितनी बातें लिख दी हैं। बन्दरों की सेना ली। तो यह है बहुत मीठा सम्बन्ध। याद की यात्रा से सतोप्रधान बनना है। जीवनमुक्ति पा ली फिर नालेज को क्या दरकार। वह कथायें आदि सभी है भक्ति मार्ग की। तुम माया पर जीत पहन रहे हो। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।

*:-*****-:*